धर्म जीवन

मई - जून - 2014

* देवात्मा क्या चाहते हैं?
* हानि परिशोध का साधन
* सेवक बनना जो देवगुरू का महा सौभाग्य है जग में
* गुस्सा कैसे काबू करें
* योग्यता से ज्यादा जरूरी है इंसान का चरित्र
* अपने अधीन जनों से काम लेने का ढंग
* विदाई संदेश
* पंडों का कारोबार
* शुभ संग्राम

देवात्मा क्या चाहते हैं?

मुझे सच्चे विश्वासी, उत्साही, या जोशीले, खुशदिल और जानदार शख्सों की ज़रूरत है, न कि सच्चे विश्वास से खाली, मुर्दादिल, निरुत्साही और बेजान शख्सों की।

जिन लोगों की रग रग में दुनिया-परस्ती रच गई हो, जिन के भीतर सच्चाई के लिए कोई प्यार और झूठ के लिए कोई नफरत न हो, जो ऐसे आला प्यार और आला नफरत से बिल्कुल खाली हों, जिन के अन्दर सच्चाई का साथ देने के लिए हिम्मत न हो, और झूठ और पाप पर ज़ोरदार हमला करने की जुर्रत न हो, जो इन बातों के विचार से बिल्कुल खोखले, मुर्दादिल, और बेजान हों, जिन के अन्दर कोई पाक जोश और उत्साह न हो, जो सच्चाई और भलाई की जय पर विश्वास न रखते हों, या न कर सकते हों..... जो क्या देवात्मा और क्या देव समाज दोनों के सम्बन्ध में कोई हितकर भाव न रखते हों, जो सच्ची श्रद्धा और दीनता से खाली हों, जो आत्मबल उत्पादक कोई भी सच्चा निज का साधन न कर सकते हों, जो सच्चाई और भलाई का राज लाने के लिए अपने भीतर कोई जोश न रखते हों, और उन की जय के लिए खूब उत्साह और जोश से काम न कर सकते हों, जो प्रार्थनाशील न हों, और महज़ अपनी ताकत पर फूलते और भरोसा करते हों, जिस के चेहरे को देख कर यह असर न पड़ता हो, कि वह कोई ऐसे जानदार आदमी हैं कि जो किसी किस्म के झूठ और किसी किस्म की बुराई को दूर करने के ख़्वाहिशमंद हैं, और उन्हें दफा या नष्ट करने के लिए संग्राम कर सकते हैं, और उन पर फतह पाने के लिए हर किस्म की दिक्कत या तकलीफ अपने सिर पर लेने के लिए तैयार हैं। जो डरपोक हों, बुज़दिल हों, आरामतलब हों, जो पड़े रहना और मेहनत से जी चुराना और पाक मुकाबला से पीठ दिखाना पसंद करते हों, और झूठ और बुराई पर हमला करने से कतराने वाले हों, जो अपना यह मोटो न रखते हों कि "फ़तह या मौत" कामयाबी या मौत, जो निरुत्साही और बेजान हों, वह लोग देव समाज के प्रचार विभाग में काम करने के लायक नहीं समझे जा सकते, और ऐसे शख्सों की हमें जरूरत नहीं।

धर्म जीवन

खण्ड 27 अंक 5 – 6
मई – जून – 2014
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

हानि परिशोध का साधन

परम पू० भगवान देव आत्मा ने पहली बार मनुष्य के वास्तविक स्वरूप से पर्दा उठाया है। उन्होंने अपनी अद्‌भुत रूहानी रोशनी में मनुष्य की प्रकृत बनावट को जाना है, वही ऐसा कर सकते थे। क्यों जो वही केवल वही मनुष्य श्रेणी से ऊपर की अर्थात सुखों के इश्कों, प्यारों से अतीत श्रेणी अर्थात सच्ची देव श्रेणी रखते हैं। उन्होंने ही मनुष्य प्रकृति सम्बन्धी नई बहुमूल्य सचाईयां रोशन की हैं। उन्होंने फरमाया है कि मनुष्य अदना सुखों का प्रेमक है और दुखों से घृणा करता है, इस कारण वह सब प्रकार की मिथ्याओं, पाप, झूठ का स्त्रोत है, जैसे फवारे से पानी निकलता है, उसी प्रकार मनुष्य के भीतर से पाप, झूठ या उनके कर्मो की वर्षा होती है। प्रत्येक मनुष्य अपनी मूल, सुख परायण प्रकृति के कारण, पापों का और झूठों का स्त्रोत बनने के लिए या रहने के लिए मजबूर है। मनुष्य होना और पाप - परायण होना, हानि परायण होना, झूठ परायण होना और मिथ्या परायण होना एक ही बात है।

मनुष्य के लिए अपनी प्रकृत मनो - स्थिति को अपने आप देखना और जानना बड़ी कठिन समस्या है, हमारे सुखों के प्यार हमारे हृदयों के भीतर गहरा अन्धेरा पैदा करते रहते हैं, इसलिए हम अपने प्रकृत वास्तविक रूप को देखने के अकसर बहुत अयोग्य रहते हैं।

हम देव समाज में आकर, सेवक सेविका सजकर, चाहे कुछ मोटी मिथ्या और कुछ मोटे पापों से विरत हो जाते हैं, परन्तु हमारी मूल सुख अनुरागी प्रकृति तो वही रहती है। इसलिए हमारे अन्दर मिथ्या और पाप की गतियां होती रहती हैं, जो हमारे हृदय के अन्दर, मैल, दोष और विकार भरती रहती हैं, क्या सेवक सेविका सजने से पहले और क्या बाद में भी अनिवार्य रूप से दूसरों के सम्बन्ध में चारों जगतों के सम्बन्ध में, अपहरण की, अन्याय की, दूसरों के मान सम्मान, जान, पद अधिकार, सुख शान्ति, अमन, चैन और सत्कार आदि के डाके मारने की गतियां होती रहती हैं, उनकी मैल, गन्द और सडांद का विकार या गन्दगी हमारे मन के अन्दर भरता रहता है। कोई मनुष्य सुख अनुरागों से जल्दी से जल्दी मुक्त नहीं होता, इसलिए अपहरण - कारी या पापी, दोषी बनने या बने रहने से भी बच नहीं सकता और मुक्त नहीं हो सकता। इस कारण मनुष्य के अन्दर अपनी अपनी नीच गतियों, पापों, अपराधों की मैल थोड़ी या बहुत भरी

रहती है। उस मैल या विकार की गन्दगी एक तरफ हमें सेवक सेविका बनकर विकासार्थी, कर्मचारी प्रचारक या पदधारी बनकर भी अपने आप आसानी से दिखाई नहीं दे सकती और दूसरी तरफ हम उस महा भयानक गन्दगी से मुक्त भी नहीं हो सकते। नये और पिछले पापों के विकार और मैल को देखे बिना और धोए बिना कोई मनुष्य धर्मवान नहीं बन सकता। जैसे गन्दे, मैले और कीचड़ भरे वस्त्र पर कोई रंग नहीं चढ़ सकता, उसी प्रकार मैले, विकार भरे हृदय के ऊपर न उच्च प्रभाव कोई असर कर सकते हैं और न उनको नया रूप दे सकते हैं।

परम पू० भगवान देवात्मा, धर्म जगत के यक्ता सूर्य हैं, केवल उन्होंने ही हानि परिशोध के तत्व और उसके विशेष महत्व को देखा है और उन्होंने ने ही धर्म जीवन की प्राप्ति के लिए इस की अनिवार्यता को अधिकारी हृदयों को रोशन किया है। कुल संसार के दूसरे धर्मों के अन्दर कहीं भी हानि परिशोध जैसा सुन्दर शब्द सुनने को नहीं मिलता और हानि परिशोध के साधन या घटनाएं तो कहां मिलनी थी। ईसाई धर्म के भीतर अपने गुनाहों को स्वीकारने या निज के दोषों, अपराधों को मानने कबूल करने का, वह भी केवल एक इन्सान (पादरी, फादर आदि) के सामने उस स्थान पर मानने का महत्व तो है, परन्तु हानि चिन्तन और हानि परिशोध आदि का कोई अंश भी नहीं। बेशक गुनाह स्वीकार की रीति भी एक सुन्दर और लाभदायक चीज़ है, नीच जीवन से बचने के लिए एक अच्छा कदम तो है। ईसाई धर्म में क्षमा करने का भी महत्व है, जो भी बहुत सुन्दर बात है, परन्तु हानि परिशोध जैसे हृदय शुद्धि के साधन का कहीं इशारा मात्र भी नहीं है। यह सम्भव ही नहीं था। इसलिए यह शब्द और हानि परिशोध के साधन किसी धर्म में नहीं मिल सकते और नहीं मिलते। परम पू० भगवान देवात्मा की रूहानी रोशनी देव ज्योति के बिना मनुष्य मात्र के लिए आत्मा की बनावट, उसके रोग, उसका पतन, पतन से मोक्ष आदि सम्बन्धी सब महान कीमती सचाईयां, मनुष्य की सोच की पहुंच से बेहद परे की चीज़ थी। इसलिए मनुष्यात्मा को अमर, अजर और निर्लेप ही देखता रहा है और देख रहा है।

परम पू० भगवान देवात्मा ने सच्चे धर्म प्राप्ति की विशेष और ठोस प्रणाली खोजी है, उसमें हानि परिशोध करके सच्ची प्रकृत शुद्धि प्राप्त करने की एक ठोस और परम अवश्यक मंजिल है। उस मंजिल को पूर्ण ठीक ढंग से प्राप्त करने के साथ ही आगे बढ़ने का मार्ग खुलता है, नहीं तो नहीं खुलता और वहीं रुक जाता है।

जिस मनुष्य को अपने पुराने पाप याद नहीं आते, दिखाई नहीं देते, दुखी नहीं करते सताते नहीं, उसको यह नज़र नहीं आता कि उसने किस किस को सताया है, इसका यह अर्थ नहीं कि उसके जीवन के भीतर कोई पाप, अपराध या पापों की मैल या विकार ही नहीं, वास्तव में उसका यह अर्थ है कि वह अवश्यक मात्रा के अन्दर परम पू० भगवान देवात्मा की अद्भुत देव ज्योति प्राप्त करने के योग्य नहीं है या अभी योग्य नहीं हुआ।

जिस मनुष्य की जीवन यात्रा के भीतर हानि परिशोध के साधनों का सुन्दर पड़ाव नहीं या मंजिल नहीं, वह धर्मवान नहीं बन सकता। उसको अवश्यक मात्रा में देव प्रभाव नहीं मिल सकते। हानि

परिशोध के बिना कोई हृदय शुद्ध और कोमल नहीं हो सकता, वह उच्च भावों की उत्पति और उन्नति के लिए सच्चे अर्थों में उपयोगी नहीं हो सकता। उच्च भावों का, सात्विक भावों का, परहित भावों का, सर्वोच्च सात्विक भावों का नाम ही उच्च जीवन है या धर्म जीवन है। उच्च जीवन की प्रप्ति के लिए हानि परिशोध की मंजिल तक पहुंचना और पार करना अत्यन्त अवश्यक नेचर गत नियम है।

हम सब नीच सुख अनुरागी और नीच घृणाकारी जीव हैं, हमारे भीतर के कितने ही नीच अनुरागों ने हमें जन्म से ही हानिकारक, दोषी, अपराधी और अपहरणकारी बनाए रखा है। हमारी स्वाद वासना ने क्या क्या लीला करवाई है, किस किस के निकट किया, कैसे एक एक पदार्थ पर अकर्षित होकर हानि उठाई, अपनी स्वाद वासना को तृप्त करने के लिए जानवरों की कबरें अपने पेट में बनाई और क्या क्या नीचताएं हुई। कैसे महां भयानक काम वासना ने हमारी क्या शक्ल बनाई। किस किस के निकट किया, किस किस के साथ क्या हाव भाव दिखाए। अन्दर ही अन्दर क्या क्या चिन्ताएं की, कामनाएँ की, गन्दी सोच बनाई और अपने हृदय को लथपथ किया, क्या क्या मस्तियां की, उस सबसे अपना कैसा भुतना रूप बनाया, और क्या क्या औरों को गन्दा किया। मैली, दूषित, नापाक दृष्टिपात करके क्या कुछ बनें।

गुरू महाराज ने फरमाया है:-

"कहां कहां बुरी चिन्ता की, कहां कहां किसी को सताया और दुखी किया (नीच घृणा के तीरों से चोट पहुंचाई) आदि। देखना यह है कि यह सब बातें साधन का अंग बन गई हैं या नहीं। यदि हानि परिशोध का साधन न चले तो पवित्रता कैसे आएगी? जहां किसी का पैसा दबाया या मारा है, वहां उसका पैसा वापिस करो।.... अपना आत्मा इस कदर पापी और रद्दी है, उसे वैसा ही बोध करो और इस प्रकार तुम्हें.... हानि परिशोध के साधनों की ओर काफी ध्यान देना चाहिए।"

जिस सेवक सेविका के भीतर, जिस कर्मचारी वा प्रचारक के भीतर, काफी मात्रा में सच्चे हानि-परिशोध के साधन पैदा नहीं होते, वहां कोई उच्च भाव या सात्विक भाव पैदा नहीं हो सकता, कोई धर्म जीवन पैदा नहीं हो सकता। जिस धर्म समाज के प्रचारकों के हृदयों में साधन जन्म नहीं लेते, हानि परिशोध की विशेष अति सुन्दर घटनाओं का निरन्तर प्रवाह नहीं चलता, वह धर्म समाज भी कोई सच्ची धर्म समाज नहीं रह सकती। वह थोथी और निर्जीव होने के लिए हैं। श्रद्धेये श्रीमान देवत्व सिंह जी का जीवन इस पक्ष में एक रोशन मिनार है।

हानि परशिोध के मुबारक वा महान साधनों का किसी मनुष्य के भीतर या किसी धर्म समाज में क्या स्थान है, इस सम्बन्ध में परम पू० भगवान देवात्मा की फरमान के बार बार पाठ करने से अधिकारी आत्माओं को लाभ हो सकता है।

"जीवन विद्या विषयक तत्व अत्यन्त गूढ़ हैं। उन्हें मान्सिक रूप से भी सामने लाने के लिए अच्छे श्रद्धावान हृदय की अवश्यकता है। इस विद्या की शिक्षा के अनुसार कैसे ऐसे अधिकारी जन की उसकी योग्यतानुसार ही अधर्म से मोक्ष और धर्म या उच्च शक्तियों की उत्पत्ति हो सकती है। जिसके हृदय में न केवल अपने किसी पाप कर्म के द्वारा

हृदय के भीतर जो विकार पैदा हो चुका हो, उसके केवल त्याग करने से, उसके पहले विकार से मुक्ति नहीं हो जाती और जब तक पापों के विकारों से मुक्ति न हो, तब तक किसी का हृदय उच्च जीवन सम्बन्धी शक्तियों की उत्पत्ति और उन्नति के योग्य नहीं हो सकता। पाप के विकारों से जब तक मनुष्य की हृदय भूमि शुद्ध न हो, तब तक उसके भीतर बेशक कुछ उच्च अंगों (भावों) के उत्पन्न होने की संभावना भी हो तो भी उसके भीतर वह अंग उसी प्रकार नहीं फूटते, जिस प्रकार सूखी, कठोर भूमि और कठोर मिट्टी में गेहूं के बीज दबे हुए भी हों, तो भी वह अंकुरित नहीं होते। इसलिए जो मनुष्य अपने हृदय के विकारों को परिशोध सम्बन्धी साधनों के द्वारा शुद्ध करने के इच्छुक नहीं बनते, उनकी हृदय भूमि के भीतर जीवन दायनी उच्च शक्तियां उत्पन्न और उन्नत नहीं होती....।"

बलदेव सिंह

सेवक बनना जो देवगुरू का महा सौभाग्य है जग में

इस युग में परम पू० भगवान देवात्मा का सेवक बनना और प्रतिज्ञाओं पर अटल रहना प्रत्येक मनुष्य का महा सौभाग्य है। बेशक परम पू० भगवान के स्टैंडर्ड के अनुसार यह थोड़े से कांटे ही झड़ते हैं, जैसे उन्होंने फरमाया है कि आठ पाप तो मेरी बेदी (मेज) भी नहीं करती, मनुष्य आठ पाप छोड़कर पशुवत जीवन ही व्यतीत करता है।

परन्तु आधुनिक युग में जीते हुए आज मुझे सेवकी की अपार महिमा अनुभव हुई, जब इस संसार में मिथ्या, पाप, अत्याचार, पशुवध, बलात्कार, आतंकवाद, भृष्टाचार के हड़ आए हुए हैं, वहां पर मिथ्या और आठ पापों से बच जाना क्या हमारा महा सौभाग्य नहीं है?

मिथ्या को ही लें, तो जिस प्रकार मानवता अन्धकार में डूबी हुई है। मन्दिरों, गुरूद्वारों, मस्जिदों और बाबाओं की बाढ़ आई हुई है और मनुष्य अन्धाधुन्ध उनके पीछे भाग रहे हैं और समझते हैं कि हम धर्म कमा रहे हैं। एक एक आतंकवादी भी अपने अराध्य से प्रार्थना करने जाता है कि वह अपने पाप-परायण मिशन में कामयाब हो, मैंने ओसामा बिन लादेन की जीवनी पढ़ी, वह बहुत नेक दिल इन्सान थे, परन्तु मज़हबी जनून ने उन्हे वहिशी बना दिया, जिस दिन अमरीका में उसने खतरनाक हमला करवाया उसके बेटे ने लिखा है कि लादेन ने अपने साथियों के साथ किस प्रकार जश्न मनाया कि हमने अल्ला ताला को खुश कर दिया। राम मन्दिर, बाबरी मस्जिद के कांड इस धार्मिक जनून का ही नतीजा है। गुजरात कांड इसी जनून का नतीजा है। दिल्ली के दंगे भी इसी जनून का परिणाम हैं।

मिथ्या ने तो इस हद तक हमारे देश का बेड़ा गरक कर दिया है, कि जगह जगह बाबाओं के डेरे बन गए हैं, वह कई कई हज़ार करोड़ सम्पति के मालिक बन गए हैं, वहां पर नशे, बलात्कार, खून होते हैं, वह पकड़े जाते हैं, जेल जाते हैं परन्तु अन्धे पैरोकार उनके पक्ष में खड़े हो जाते हैं, इससे बढ़कर मिथ्याओं का अन्धकार क्या होगा? मनुष्य सुख अनुरागी है, पारिवारिक जीवन में तरह तरह के दुखों सुखों का आना अवश्यक है, उसकी इसी कमजोरी का शैतान लोग लाभ उठाते

हैं, उनके दुख दूर करने वा उनके अभावों को दूर करने के लालच देकर उनको ठगते रहते हैं।

मिथ्याचार के कई कई इतने घिनौने साधन अपनाए जाते हैं, जैसे आग पर चलना, बच्चों को ऊपर से फैंकना आदि, परन्तु सुख मनुष्य को मिथ्या परायण बना देते हैं।

इसमें केवल अनपढ़ वा पिछड़े हुए वा गरीब लोग ही नहीं फंसे हुए, बल्कि धनाड्य, शिक्षित उच्च पदधारी, बड़े बड़े राजनैतिक नेता भी इसका शिकार हैं। बड़ा दुख होता है, जब अमिताभ बच्चन जैसे सुलझे हुए लोग 50,50 लाख रू० किसी पूजा स्थान को देते हैं, जबकि उस पैसे से वह कितने गरीबों को घर बना कर दे सकते थे। बापा मौर्या की पूजा करके विसर्जन करने में हमारे बड़े बड़े फिल्मकार भी शामिल होते हैं, उनका पानी पर क्या प्रभाव पड़ता है, जीव जन्तुओं पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसका कोई नहीं सोचता। मीडिया वाले भी मिथ्या साधनों को महिमा मंडित करते हैं।

इस मिथ्या विश्वासों के अन्धकार में डूबी हुई दुनियां में हमारा कितना बड़ा सौभाग्य है कि पू० भगवान ने हमें सेवकी में ग्रहण करके इन मिथ्या साधनों से मुक्ति दिला दी और हमें यह समझ आ गई कि इन मिथ्या साधनों से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं। पूजा, पाठ से धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं, धर्म उच्च जीवन का और हमारे अच्छे व्यवहारों का नाम है।

उससे आगे पू० भगवान ने पहली प्रतिज्ञा में ही सब प्रकार के नशों से बचने का प्रावधान किया है। आज नशों के समुन्द्र में मानवता गोते खा रही है। कितने प्रकार के नशे हैं, उनको पूरा पूरा जानना भी कठिन है। ड्रगज़ की चपेट में हमारा पूरा पंजाब आ चुका है और बड़े बड़े नेता इस धन्धे को बढ़ावा दे रहे हैं। पैसा मुख्य है, अपने देश के नौजवानों की सेहत मुख्य नहीं। नशे के कारण ज़मीने बिक रही हैं, लोग बिन आई मौत मर रहे हैं, चोरियों की वारदातें बढ़ रही हैं। शराब एक आम चलन बन गया है। इसके बिना सब पार्टियां अधूरी समझी जाती हैं। यह सम्यता का चिन्ह बन गया है, जो नहीं करता उसे पिछड़ा हुआ समझा जाता है। इससे किस प्रकार तबाही आ रही है। शराब पीकर कैसे कर्म होते हैं, लड़ाईयां होती हैं, ऐक्सीडैंट होते हैं, सेहत का विनाश होता है, दिन पर दिन हाई ब्लडप्रैशर, शूगर के केस बढ़ रहे हैं, इस सब हानि का ब्यान नहीं हो सकता।

तम्बाकू से जो जिव्हा, मुंह फेफड़ों का कैंसर बढ़ रहा है, उसके विषय में हर सिनेमा हाल में इतने भयानक परिणाम अवश्यक रूप से दिखाए जाते हैं, परन्तु क्या कोई बचता है? मनुष्य इतना गुलाम हो जाता है, "देखकर भी साफ हानि, फिर भी हूं लाचार मैं" यह उक्ति सत्य बैठती है। अब केवल पुरुषों में ही नहीं, शराब और सिगरेट, ड्रगज़ का चलन स्त्रियों में भी दिन पर दिन बढ़ रहा है।

हमारा कितना बड़ा सौभाग्य कि केवल सेवक बनकर हम इन भयानक नशों से बच गए और हमारे घरों में जो इस कारण कलह क्लेश होता था उससे बच गए। यह हमारा कितना बड़ा सौभाग्य है।

दूसरी प्रतिज्ञा मांसाहार के विषय में है कि सेवक बन कर न स्वयं मांसाहार करेंगे, न किसी की इसमें सहायता करेंगे, इससे भी आगे अपने मनोरंज़न के लिए भी किसी पशु पक्षी को हानि नहीं पहुंचाएगे, उनकी जान नहीं लेंगे। यह प्रतिज्ञा मनुष्य को हिंसक बनने से बचाती हैं। जिव्हा के स्वाद के लिए जो लाखों पशुओं का प्रतिदिन वध होता है, वह मानवता के नाम पर अभिशाप है। जब तक पशुओं पर यह अत्याचार जारी रहेगा, तब तक इस पृथ्वी पर भी हिंसात्मक क्रियाएं जारी रहेंगी। मांस भक्षण मनुष्य की हमदर्दी की कोमल भावना का कत्ल कर देता है।

केवल हिंसक बनने तक ही मांस भक्षण की हानि नहीं, सेहत के लिए भी बेहद हानिकारक है। पशुओं के वध के समय और वध के लिए ले जाते समय उनके भीतर जो दुख की, कष्ट की लहरें हैं वह उसके मांस के अन्दर भी जाती हैं, जो मनुष्य के शरीर में जाकर तरह तरह के डिप्रैशन वा रोग पैदा करती हैं। पशुओं को जो तरह तरह के रोग होते हैं, वह भी इन्सान के शरीर में जाते हैं। इससे भी आगे मांस खाने से हड्डीयां सख़्त हो जाती है, चोट आदि से वा गिरने से जल्दी हड्डी टूटती है और फिर जल्दी जुड़ती नहीं है। नेचर ने मनुष्य के लिए सब्जियों, अनाजों और दालों के रूप में सम्पूर्ण भोजन बनाया है, जिससे हमें balanced diet मिलती है।

पू० भगवान ने हमें वहशी होने से बचाया है। बड़े बड़े शिकारियों के हाथों से बन्दूकें छुड़वा कर उन्हें पशुओं के लिए चारा और पानी के कुण्ड बनाने के योग्य बनाया है। पशु जो हमें दूध देते हैं, घोड़े, ऊंटों ने सवारी का काम दिया, कुत्तों ने वफादारी के दृष्टांत पेश किए हैं। बैलों ने हमारे लिए अनाज पैदा किया है। पू० भगवान ने उनका उपकारी रूप हमें दिखाया है। पशु खाने की चीज़ नहीं, सेवा करने की चीज़ हैं। यह प्रतिज्ञा करके हम एक बहुत बड़े पाप से सुरक्षित हो गए। यह हमारा सौभाग्य है।

इससे आगे चोरी, ठगी, अमानत में ख़्यानत, किसी से उधार लेकर वापिस न करना, रिश्वत न लेना आदि की प्रतिज्ञा हैं, जिनके करने से हम साधारण ईमानदारी की जिन्दगी जीते हैं। आज जो हमारे देश में, इन कारणों से हाहाकार मचा हुआ है। रिश्वत के बिना एक छोटा सा काम करवाना मुश्किल हो गया है। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा। लाखों, करोड़ों नहीं, कई कई हज़ार करोड़ों की रिश्वत, कई हज़ार करोड़ों के घोटाले हमारे सामने आ रहे हैं, जिससे देश तबाह हो रहा है। यह सारा दृष्य हमारे सामने है। जो हमारे राजनैतिक लीडर सेवा का दम भरते हैं, सबसे बढ़कर भ्रष्ट हो गए हैं। जिनको साईकल नसीब नहीं होता था, वह आज हवाई जहाजों के मालिक हैं। सब तरफ भ्रष्टाचार का बाज़ार गर्म है। भाई भाई का अधिकार छीन रहा है। जमीन जायदाद के लिए सगे बहन भाईयों, पति पत्नी के कत्ल हो जाते हैं, यह भयावह दृष्य हम रोज देखते वा पढ़ते हैं।

हमारे कितने बड़े सौभाग्य कि पू० भगवान ने हमें यह प्रतिज्ञा करके कितना सुरक्षित कर दिया, दुख होता है कि प्रतिज्ञा करके भी बारीकी में ईमानदारी हमारे सुख अनुराग नहीं आने देंगे। अगर हमारे हिसाब किताब में गड़बड़ी है, तो हम पू० भगवान के सच्चे सेवक नहीं, यदि उसका कोई परिशोध नहीं, वा संस्थाओं के प्रबन्ध कर्ता होकर वहां हिसाब किताब में गड़बड़ी करने देते हैं, वा उसे अनदेखी करते हैं, तो हम सेवकी की प्रतिज्ञा तोड़ते हैं। इस ओर हम सब सेवकों को बहुत सावधान रहना चाहिए।

इससे आगे पू० भगवान ने जो प्रतिज्ञा रखी है, वह सचमुच पशुओं को नहीं करवानी पड़ती। मैं व्यभिचार नहीं करूंगा, या करूंगी, और एक पति वा पत्नी के जीते जी दूसरी शादी नहीं करूंगा वा करूंगी। इस पहलू में तो हमारे देश का मुंह बिल्कुल काला हो गया है। छोटी मासूम बच्चियों के साथ बलात्कार की घटनाएं दिल दहला देती हैं। इन्सान वहिशीपन से भी नीचे गिर गया है। पिछले कुछ सालों से तो ऐसी दुखदाई घटनाओं की बाढ़ आ गई है। इसका अधिकतर कारण नशे हैं। हमारी बहू बेटियां कहीं भी सुरक्षित नहीं। यह मनुष्य रूपी भेड़ियों के लिए मौत की सजा भी कम है। दिल्ली वाली घटना में जो वहिशीपन

उन गुण्डों ने दिखाया क्या उनके लिए आसान मौत काफी है?

इससे आगे यह तो हमारे देश में कानून बन गया कि विवाह के होते कोई दूसरी शादी नहीं कर सकता परन्तु विवाह के साथ भी दूसरी स्त्रियों के साथ रिश्ते रखना भी आम प्रचलित हो गया है, अफसोस कि पैसे वा ऐश का लालच लड़कियों वा स्त्रियों को भी गुमराह कर रहा है और ऐसे दुष्चरित्र रखने वाले जनों को उनका सहयोग मिल जाता है। इससे घरों में नर्क पैदा हो रहा है, तलाक हो रहे हैं, बच्चों का भविष्य खतरे में पड़ा हुआ है। इसके जितने भयानक परिणाम निकल रहे हैं, वह हमें देखने को मिलते हैं।

पू० भगवान ने यह प्रतिज्ञा रखकर हमारे परिवारिक जीवन का भविष्य सुरक्षित कर दिया। इस कारण जो घरों में कलह क्लेश है, उससे हमारी रक्षा हो गई, यह कितना बड़ा वरदान है।

उपरोक्त तथ्यों को देखते हुए हमें अपने महा सौभाग्य को अनुभव करना चाहिए और पू० भगवान को तहदिल से धन्यवाद देना चाहिए कि बेशक हम आत्मा का अधिक ज्ञान नहीं पा सके या आत्म बोध की उच्च कोटि को प्राप्त नहीं भी कर सके, परन्तु यह प्रथम श्रेणी की प्रतिज्ञाओं से ही हम जीवन में सुरक्षित हो गए हैं।

कल्पना करो कि यदि सारी मानवता केवल यह प्रतिज्ञाएं ही पूरी करें, तो यह धरती स्वर्ग बन जाए, तो हमें सदा यह याद रखना चाहिए कि "सेवक बनना जो देवगुरू का, महा सौभाग्य है जग में।"

सुरजीत बराड़

गुस्सा कैसे काबू करें

मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि यह अवश्यक नहीं गुस्से का कोई महत्वपूर्ण कारण हो, कई बार रोज़ाना की छोटी छोटी बातों पर भी गुस्सा आना आम बात है।

बच्चे पढ़ाई नहीं करते तो मां बाप को गुस्सा आता है। बच्चों का पढ़ाई को मन नहीं करता तो बच्चों को गुस्सा आता है। सुबह आफिस जाते हुए पति को जुराबें, रूमाल या ऐसी ज़रूरी चीज नहीं मिलती तो गुस्सा आता है। पत्नि दिन भर के आफिस वा घर के काम से थक जाती है, तो गुस्सा आता है। पति देरी से घर आए तब गुस्सा आता, फोन वापिसी में न करे तो गुस्सा आता है। पत्नी खाना बनाने में लेट हो जाए तो गुस्सा आता है, सब्जी मनमर्जी की न बने तेा गुस्सा आता है। घर से गुस्सा होकर आफिस में जाकर अपने मताहतों पर बेमतलब गुस्सा आता है। लोग कह भी देते हैं कि ऐसा लगता है कि साहब आज घर से लड़कर आए हैं। बच्चे जिद करते हैं तो मां को गुस्सा आता है। आजकल के मंहगाई के युग में जब रू० की तंगी होती है तो पति पत्नी एक दूसरे पर गुस्सा निकालते हैं।

गुस्सा एक बहुत ही स्वभाविक क्रिया है। मनुष्य के किसी भी सुख पर जब चोट लगती है तो उसे गुस्सा आ जाता है। क्रोध वा गुस्से में मनुष्य यह समझने में अक्षम हो जाता है कि उसके गुस्सा करने से कुछ भी सुधरने वाला नहीं बल्कि अपनी ही सेहत को, मन की शान्ति, घर की शान्ति को नुकसान पहुंचता है।

एक पोस्ट मास्टर की घटना है कि एक पोस्टमैन की ग़ल्ती पर उसने खूब डांटा, परन्तु फिर भी उसका गुस्सा शान्त नहीं हुआ, खाना खाने चला गया, आकर फिर उस को डांटने लगा, परिणाम यह हुआ कि

वहीं हार्ट अटैक से मर गया। गुस्से में वह नहीं जानता था कि वह अपनी ज़िन्दगी से ही हाथ धो बैठेगा। गुस्सा योग्य से योग्य जन को भी पागल बना देता है।

गुस्से के अनेकों कारण हैं, परन्तु प्रत्येक मनुष्य को अपने गुस्से के निवारण के लिए सोच विचार करना चाहिए। क्रोध करना किसी भी तरह नुकसानदेह है। शारीरिक हानि के साथ साथ अधिक क्रोध करने वाला जन सामाजिक मान सम्मान भी खो बैठता है। घर भी नर्क बन जाता है। परन्तु जब गुस्सा ज्वालामुखी बन जाता है, तो उसे नियंत्रित करना भी आसान बात नहीं। क्रोध में क्योंकि मनुष्य का स्वयं पर भी नियंत्रण नहीं रहता, तो पहल सामने वाले को ही करनी चाहिए। इसका अर्थ है खामोशी, यदि सामने वाला तड़ातड़ जबाब देता रहेगा तो क्रोधी को काबू में रखना कठिन है, जब सामने वाला कुछ नहीं बोलेगा, तो वह स्वयं ही धीरे धीरे शान्त हो जाएगा, और किसी सीमा तक शर्मिंदगी भी अनुभव करेगा। कुछ छोटे छोटे नुस्खे अपने क्रोध को शान्त करने के लिए भी अपना सकते हैं।

(1) लम्बी सांस खींचकर मन में एक से 10 तक गिनें, उससे शायद आपका गुस्सा कुछ शान्त हो जाए।

(2) नियमित रूप से सैर करें, आप तरोताजा महसूस करेंगे। शरीर में खून का प्रवाह ठीक होगा। सैर करते हुए पहले दिन की दिनचर्या पर विचार करें कि उस दिन आपको गुस्सा किस किस बात पर आया था, उससे आप आगे के लिए कैसे बच सकते हैं। उस दिन कोशिश करके उन कारणों से बचने या गुस्सा न होने का अपने आप से वायदा करें। मनुष्य बहुत कमज़ोर है, वह वायदा करके भी उस पर पूरा नहीं उतरता क्योंकि सुख पर चोट लगने से मनुष्य स्वभाविक बौख़ला जाता है। परन्तु यदि हररोज़ यह कोशिश जारी रहे, तो आप किसी सीमा तक सफल हो सकते हैं।

(3) बुरे विचारों से बचें, इस दुनियां में जीते हुए हमें लोगों से बुरे व्यवहार मिलना, वा अपनी इच्छा के विरूद्ध व्यवहार मिलना ज़रूरी है। उनके प्रति बार बार सोचकर, हम उसको ही हानि नहीं पहुंचाते बल्कि उसके प्रति अपने गुस्से को बढ़ाकर अपने आपको अशान्त अवश्य कर लेते हैं। यह बहुत कठिन साधन है। मैंने बहुत बार इस विषय पर सोचा है कि बुराई करने वाले को दिल से क्षमा करूं, पर फिर भी मन अशान्त हो जाता है, परन्तु मार्ग यही है कि बुराई करने वाले को क्षमा कर दें, परन्तु यह नहीं कि उससे फिर बुरे व्यवहार पाने के लिए अवश्य उससे सम्बन्ध बनाएं, परन्तु घृणा पर काबू रखने की हम सब को अवश्यकता है। खुश रहने वा मुस्कराने का यत्न करें। आते जाते भी किसी से मिलने पर मुस्करा कर जाएं, इससे स्वयं को खुशी मिलती है। हमारी सभ्यता में यह बहुत कमी है। विदेश में लोग न भी जानते हों, तो भी सैर करते हुए मुस्करा कर विश करके जाएंगे। धीरे धीरे हम लोग भी अच्छी बातों को अपनाएं। दुनियां बहुत खूबसूरत है, जहां पाप फैला हुआ है, वहां महान और अच्छे इन्सान भी हैं। अच्छे विचार आपको खुश रखेंगे, तो गुस्सा कम आएगा।

(4) चैकअप करवाएं: कई बार ब्लड-प्रैशर बढ़ने से भी गुस्सा ज्यादा आता है। चैकअप अवश्य कराएं, विशेष कर जब आपको लगे कि पहले इतना गुस्सा नहीं आता था, अब आता है।

(5) डायरी लिखें:- यह बहुत कठिन साधन है, परन्तु जिस जिस ने इसको अपनाया है, अपने गुस्से पर काबू पाया है। विशेषकर जिनको ज्यादा गुस्सा आता है, यदि पूरे दिन में किन किन बातों पर गुस्सा आया, लिखते रहें तो हमारी कांशस अगले दिन हमें याद दिलाएगी कि आज इस बात पर गुस्सा नहीं करना।

धीरे धीरे आप उन बातों पर स्वंय ही धैर्य

करना सीख जाएंगे। गुस्सा नियंत्रित हो जाएगा।

गुस्से को नियंत्रित करने के लिए सर्व प्रथम हमें यह अनुभव करना अवश्यक है, कि हम में गुस्सा है और हर व्यक्ति में गुस्सा है, मात्रा का अन्तर है। अपने गुस्से को समझने के बाद और उससे छुटकारा पाने की तीव्र इच्छा रखकर ही हम उपरोक्त साधनों को अपना सकते हैं और गुस्से से जो बुरे नतीजे निकलते हैं, उनको बार बार याद करें, तो आपके व्यवहार वा दृष्टिकोण में अश्चर्य जनक परिवर्तन आएगा। समाज में परिवार में आपका मान बढ़ेगा। प्रसन्नचित व्यक्ति से मिलकर हर कोई खुशी महसूस करता है।

सुरजीत बराड़

योग्यता से ज्यादा जरूरी है इंसान का चरित्र

पहली कहानी: बेंगलुरू में 1949 में सर सीवी रमन ने रिसर्च इंस्टीच्यूट स्थापित किया। यहां साइंटिफिक आसिस्टेंट के पद के लिए कई लोगों की अर्जियां आईं। कई लोगों ने इंटरव्यू दिए। जब यह प्रक्रिया खत्म हो गई तो रमन ने देखा कि एक आदमी अब भी इंटरव्यू रूम के बाहर इंतजार कर रहा है। उसका इंटरव्यू हो चुका था। और उसे पद के योग्य नहीं पाया गया था। फिर भी वह डटा हुआ था। रमन उसके पास गए। रौबदार आवाज में बोले, 'आप यहां क्या कर रहे हैं? हम आपसे कह चुके हैं कि आपको हम अपनी टीम में शामिल नहीं कर सकते। फिर आप क्यों यहां अपना समय खराब कर रहे हैं?' उस आदमी ने जवाब दिया, 'सर मैं जानता हूं कि मेरा सिलेक्शन नहीं हो सकता। इसलिए मैं यहां आपके संस्थान की ओर से मुझे दिया गया यात्रा खर्च लौटाने आया हूं। यहां इंटरव्यू के लिए आने-जाने को मुझे यह पैसा दिया गया था।' रमन के अचरज का ठिकाना नहीं था। मुंह से निकला, 'ओह तो ये बात है।' उनकी आवाज में अब नरमी आ चुकी थी। उन्होंने उस युवक के कंधे पर हाथ रखा। उसे अपने ऑफिस में ले गए। दो मिनट सन्नाटा छाया रहा। फिर रमन उस युवक से बोले, 'तुम्हारा सिलेक्शन हो चुका है।' वे आगे बोले, 'मेरे लिए यह मायने नहीं रखता कि तुम्हारी फिजिक्स कमजोर है। वह तो मैं तुम्हें सिखा दूंगा। मेरे लिए यह ज्यादा मायने रखता है कि तुम एक चरित्रवान व्यक्ति हो।'

दूसरी कहानी: पंडित गोविंद वल्लभ पंत उत्तराखंड के अग्रणी नेता थे। आजाद भारत में वे संयुक्त उत्तरप्रदेश के पहले मुख्यमंत्री थे। केंद्र में 1955 से 61 के बीच वे गृहमंत्री भी रहे। उनकी एक आदत बहुत खास थी। वे हमेशा अपने सरकारी और निजी खर्च का हिसाब-किताब अलग रखते थे। इस बात का हमेशा ध्यान रखते थे कि परिवार के सदस्यों और खुद उन पर होने वाला खर्च उन्हीं की कमाई से हो। एक बार किसी सरकारी बैठक में सर्व किए गए चाय-नाश्ते के बिल पर उन्होंने दस्तखत करने से मना कर दिया। दलील दी कि बैठक के लिए इसका प्रावधान ही नहीं थी। और यह बिल भी कितना? छह रू० और 12 आने।

उनके स्टाफ ने बार-बार उनसे आग्रह किया कि वे बिल पर दस्तखत कर दें। लेकिन वे नहीं माने। उल्टे अपनी जेब से पर्स निकाला। उसमें से बिल के पैसे निकालकर स्टाफ को थमा दिए। कहा, 'यह पैसा लो और बिल का भुगतान कर दो। सरकार के पैसों से यह बिल भुगतान करने की इजाजत मैं नहीं दे सकता।'

मैनेजमंट फंडा

अपने अधीन जनों से काम लेने का ढंग

कुछ पौधे इस तरह के होते हैं जो अपने आसपास और किसी प्रकार के पौधों को नहीं उगने देते वह जहां उगते हैं, उस जमीन को इस तरह जंगली बना देते हैं, कि वहां जो पौधे पहले उगे होते हैं वह भी टुंड मुंड हो जाते हैं।

इसी प्रकार कुछ मालिक या अफसर अपने आसपास का वातावरण इस प्रकार बना देते हैं कि उनके अधीन काम करने वाले और लोग निकम्में बन जाते हैं। उनको देखकर उनके अधीन कर्मचारियों की जान सूखने लगती है। कर्मचारियों को ऐसे प्रतीत होने लगता है कि जैसे उनका दम घुटने लगता है कि वह कुचले जा रहे हैं। इस प्रकार के मालिक या अधिकारी अपने अधीन कर्मचारियों को डरा धमका सकते हैं, पर उनसे अच्छा काम कभी नहीं ले सकते और न ही सच्चा सन्मान प्राप्त कर सकते हैं।

बहुत सारे मालिक या अधिकारी अपने कर्मचारियों का उत्साह नष्ट करने के लिए बड़े कुशल होते हैं। उनको दूर से देखते ही कर्मचारी परेशान हो जाते हैं और अपनी सारी कार्यकुशलता भूल जाते हैं। ऐसे मालिकों वा अधिकारियों के अधीन काम करना कर्मचारियों के लिए बहुत कठिन हो जाता है।

कई लोग काम लेने का यही तरीका ठीक समझते हैं वह अपने व्यवहार वा डांट डपट करके और अकारण दोष निकालते रहते हैं इससे कर्मचारियों का व्यक्तिगत गुण, आशा और उत्साह नष्ट हो जाता है, ठण्डा पड़ जाता है।

बहुत सारे स्वामी और अधिकारी यह समझते हैं कि कर्मचारियों की प्रशंसा कभी नहीं करनी चाहिए। वह यह सिद्धान्त बना लेते हैं प्रशंसा के अवसर आने पर वह प्रशंसा नहीं करते। वह दोष निकालना ही अपनी खूबी समझते हैं। इससे बुरा कोई काम लेने का तरीका नहीं है। काम लेने वालों को समझना चाहिए कि कुछ लोग प्रशंसा लेने के लिए ही जीते हैं। उचित और ठीक समय पर प्रशंसा बिना वह अच्छा काम नहीं कर सकते। प्रशंसा से प्रत्येक जन में काम करने की प्रेरणा वा उत्साह पैदा होता है।

जब कोई कर्मचारी अपनी अधिक से अधिक योग्यता वा यत्न से अच्छे से अच्छा काम कर रहा हो तो उसकी सराहना न करना निर्दयता है। इससे अवश्य ही काम बिगड़ता है।

कई जन तो थोड़ी सी सराहना पाकर सर्वोतम कार्यकर्ता बन जाते हैं। थोड़ी सी प्रशंसा से अनेकों के जीवन बदल गए हैं यदि आप मीठे शब्द या छोटे से पत्र के द्वारा किसी के हृदय को उत्साहित करते हो तो आप निसन्देह अच्छा काम लेने की योग्यता रखते हो। आपको आपका काम सही और समय पर मिलेगा।

जब कोई हमारी योग्यताओं, कार्यशक्ति और कार्यकुशलता की सराहना करता है तो हमें बड़ा सुख मिलता है। हमें अपने विषय में और अपने काम के विषय में सोचने का मौका मिलता है। उस समय हमें अपने भविष्य के विषय में, अपनी सफलता के विषय में आशा होती है, तो हम और भी अच्छा काम दिखाने का यत्न करते हैं।

कर्मचारियों की कार्यकुशलता का आधार उत्साह है। उत्साह से ही काम में लगन बढ़ती है। जब लगन बढ़ती है तो मनुष्य उसके विषय में सोचता है, इससे उसके भीतर मौलिकता आती है, तब वह कुशलता से काम करता है, वह उस काम में विशेषता लाने का

यत्न करता है। अनुचित रूप से दबाने और कुचलने से कर्मचारी की मौलिकता (Natural Telent) मारी जाती है। वह घबराहट की दशा में रहता है। फिर उसकी सफलता कठिन हो जाती है। चाहे खेत की उपज का काम हो या कारखानों में उत्पादन का, सेना का काम हो, चाहे दफतर का, मण्डी का काम हो या दुकान का, सब जगह अपने अधीन काम करने वालों का उत्साह बढ़ाओ। उत्साह और आशा से ही सब प्रकार का उत्पादन बढ़ता है।

कर्मचारियों के दोष ही देखते रहने की नीति से कभी लाभ नहीं होता। इसमें आपकी शक्ति भी नष्ट होती है।

परेशान करने, डांटने, ग़ल्तियां निकालने और दोष ढूंडने की ज़रूरत नहीं। यदि आप उनके व्यक्तित्व का उचित सन्मान करते हो, उनको ठीक तरीका बताते हो और साथ ही उन्हें उत्साह देते हो तो कर्मचारी आप को अच्छा काम देंगे और आपका सन्मान भी करेंगे।

सवैट - मारटन

विदाई संदेश

यह विदाई सन्देश हमारे एक माननिय धर्म सम्बन्धी की ओर से अपनी रिटायमैंट पर छपवाकर बांटा गया था, जिनमें उन्होंने अपनी सारी ज़िन्दगी के अनुभवों को सबसे share किया है।

सह सम्पादिका

प्रिय मित्रो! आज मेरे 39 वर्ष के लम्बे सेवाकाल के विदाई समारोह के शुभ अवसर पर मैं आप सबको हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। इतने लम्बे सेवाकाल को केवल अपने बलबूते पूरा काम करना मेरे लिए कभी सम्भव न होता यदि मेरे सहकर्मी साथी तथा अधिकारीगण मुझे सहयोग न देते, मेरी गल्तियों को दरगुज़र तथा मुझे माफ न करते तथा अपना अमूल्य मार्गदर्शन न देते। आज अपना सारा सेवाकाल मेरी आँखों के चलचित्र की तरह घूम गया तथा इस काल में जो कितने ही जन मुझे मिले तथा बिछड़े, वो सब एक एक करके मुझे याद आ गए तथा मेरे दिल को उनकी याद ने झझकोर दिया। मैं उन सब का भी हार्दिक धन्यवाद करता हूँ।

इस विदाई के अवसर पर अपने जीवन के कुछ खट्टे-मीठे अनुभव मैं आपसे बाँटना चाहता हूँ- जीवन के सम्बन्ध में मैंनें जो कुछ पढ़ा, सीखा तथा पाया, वह सब आपके सम्मुख रखना चाहता हूँ: -

1) मैंने जाना कि इस संसार में हमारा पहला जन्म है- इससे पहले इस संसार में हम कभी पैदा नहीं हुए।

2) जब हम इस संसार से विदा हो जाएंगे अर्थात् जब हमारी मृत्यु हो जाएगी, तो हम दोबारा इस संसार में कभी नहीं आ सकेंगे अर्थात् यही हमारा पहला तथा यही हमारा अन्तिम जन्म है। अत: इस मनुष्य जीवन को प्रकृति (nature) का एक अमूल्य तथा दुर्लभ अवसर तथा उपहार जानकर, इसे बहुत ही सुन्दर तथा हितकर ढंग से तथा सच्चाई के साथ जीना चाहिए।

3) मुझे यह भी जानने का अवसर मिला कि हमारी जीवनी शक्ति अर्थात् "आत्मा" की अपनी एक अति अद्भुत तथा जटिल संरचना है। हमारी आत्मा शरीर की ही तरह जन्म लेती है, शरीर की तरह विभिन्न परिस्थितियों में रोगग्रस्त हो जाती है। शरीर की ही तरह

विभिन्न परिस्थितियों में स्वस्थ रह सकती है तथा शरीर की ही तरह विभिन्न परिस्थितियों में मृत्यु की शिकार होकर मर भी जाती है।

4) मैंने इस संसार में आकर यह भी ज्ञान पाया कि प्रत्येक मनुष्य का प्रकृतिमूलक सत्य लक्ष्य यह है कि वह अपने आप को संसार की धरोहर जाने तथा प्रकृति के विकासक्रम का सच्चा सहायकारी बनकर जिये अर्थात् अपने जीवन से अधिक से अधिक निर्माणकारी और विकासकारी कार्य करे, क्योंकि ऐसा करने से जहाँ वह प्रकृति का सच्चा साथी बनता है, वहाँ वह इस विश्व में अधिक से अधिक लम्बी आयु (इस लोक तथा परलोक की) पाने का अधिकारी भी बनता है। हम इस बात को माने अथवा न माने कि हम सबको एक दिन मृत्यु की आगोश में जाना पड़ेगा। अत: उस क्षण का सामना करने के लिए हमें बहुत तैय्यारी करने की आवश्यकता है। विश्व में निर्माणकारी कार्यों का सच्चा साथी बनना ही वह असल तैय्यारी है जो हमें मृत्यु का सामना करने की शक्ति प्रदान करती है।

5) कोई मनुष्य मरना नहीं चाहता। हम सदा जीना और सदा सुख से जीवित रहना चाहते हैं। मुझे जीवन का यह गूढ़तम सत्य भी जानने का अवसर मिला कि हम मनुष्य अपनी इन दोनों मूल आवश्यकताओं को कैसे पूरा कर सकते हैं? आप सबको जानकर आश्चर्य होगा कि हम शरीर की तरह आत्मिक रूप में भी सदा जिंदा रह सकते है यदि हम जीवन-विषयक उन नियमों को जान सकें तथा अपने जीवन में उनका शत-प्रतिशत सही ढंग से पालन कर सकें।

6) प्रिय मित्रो! बचपन से ही मुझे ऐसे महान् व्यक्ति की आवश्यकता बहुत गहराई से महसूस होती थी, जो शत-प्रतिशत सही हो या ठीकपन की ओर जाने का जबरदस्त रूझान रखता हो। मुझे गर्व है कि ऐसी अद्वितीय हस्ती के अद्वितीय जीवन को पढ़ने, जानने तथा सीखने का मुझे सुन्दरतम अवसर मिला और इस प्रकार उनके जीवन से उच्च प्रेरणाएँ पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। काश: पाठकगण भी ऐसी हस्ती के आन्तरिक जीवन को जानकर लाभ उठा सकें।

7) हमारा डाक एवम् तार विभाग जो कालान्तर में संचार विभाग और अब BSNL में परिवर्तित हो चुका है, वह एक अनूठा संदेश देता है: -

अंहनिशं सेवामहे! अर्थात् Service before self. इन तीन शब्दों में हमारे जीवन का सार (सच्ची मानवता) छुपा हुआ है, "सच्ची मानवता इस बात में निहित है कि हम दूसरों के अधिकारों तथा अपने कर्त्तव्यों के प्रति कितने संवेदनशील हैं।" हम जितना सत्य, निष्ठा, श्रद्धा तथा देशभक्ति के भावों से ओतप्रोत होकर जनता की सेवा करेंगे, उतना ही हमारी कार्य-कुशलता, कार्यक्षमता का न केवल विकास होगा बल्कि हमारा सेवाकाल उतना सुन्दर, रसमय तथा शान्तिपूर्वक व्यतीत होगा। सबसे बढ़कर हमें सासांरिक धन के साथ साथ आत्मिक-धन अर्थात धर्म-धन अर्जित करके अपना मनुष्य जीवन सफल करने का महा उच्च सौभाग्य भी प्राप्त होगा।

काश: हम प्रकृति के इस अमूल्य संदेश को हार्दिक भावों से समझकर आत्मसात कर सकें कि विश्व के निर्माण में यदि मैं कुछ भी सहायक हो सकूँ तो यह मेरा अहोभाग्य होगा।

धन्यवाद सहित

(चन्द्रगुप्त)
व. श. प्र. मो . 9416958387
का. मुख्य महाप्रबन्धक, दूर संचार परिमण्डल
अम्बाला

पंडों का कारोबार

शादियों का सीजन आते ही पंडे पुरोहित धार्मिक संस्कार के नाम पर शुभ अशुभ मुहूर्त का जाल बुन कर लोगों को ठगने का कारोबार शुरू कर देते हैं। भारतीय जनमानस के दिलोदिमाग में पैठ बना चुके अंधविश्वास की बदौलत ये पंडे किस तरह धर्म और स्वार्थ के धंधे से अपनी जेबें भरते हैं, बता रहे हैं भारत भूषण श्रीवास्तव। (सरिता में)

साल 2014 में कुल 90 दिन शादी की शहनाइयां बजेंगी। इन में सब से ज्यादा विवाह 17 जून को होंगे। साल 2013 में 126 दिन में शादियों के मुहूर्त थे। यह खबर पिछले दिसंबर से एक नियमित अंतराल से प्रकाशित प्रसारित की जा रही है और हर महीने पड़ने वाले तीजत्योहारों पर इस का अलगअलग तरह से दोहराव होता रहेगा। बड़े पैमाने पर धुआंधार तरीके से इस खबर के प्रचार प्रसार का सीधा संबंध पंडों की दुकान से है जिन की आमदनी का एक बड़ा जरिया शादी कराना भी है।

पत्रपत्रिकाओं और न्यूज चैनल्स ने इस अनुपयोगी मसौदे को खबर बना कर बड़े दिलचस्प तरीकों से पेश किया। आम लोगों ने भी उतनी ही दिलचस्पी से इसे देखा, पढ़ा पर किसी ने यह सोचने समझने की न कोशिश की और न ही जरूरत समझी कि आखिरकार इस की उपयोगिता क्या थी।

जिन के यहां विवाह योग्य उम्मीदवार हैं उन्होंने तो बाकायदा ऐसी सभी खबरों की कतरन संभाल कर रखीं ताकि बातचीत के पहले दौर का काम संपन्न कर लिया जाए जिसे मुहूर्त कहते हैं। इंटरनैट इस्तेमाल करने वालों ने कतरन नहीं रखी क्योंकि यह जानकारी कई वैबसाइटस पर मौजूद है।

दरअसल, इस प्रचार के पीछे पंडों का बड़ा हाथ और स्वार्थ है जिन का कारोबार चलता ही मुहूर्त से है। सदियों से ये लोग शुभ मुहूर्त में काम करवाने का धंधा कर रहे हैं और आम लोगों से मुहूर्त बताने के अलावा धार्मिक और गैर धार्मिक संस्कार संपन्न कराने की फीस वसूल रहे हैं।

मुहूर्त के कारोबार की बुनियाद अनिष्ट का डर और उस से बचना है। कोई नहीं चाहता कि भविष्य में उस के काम में किसी तरह के अड़ंगे पेश आएं। संभावित विघ्नों से बचने के लिए लोगों को पंडों के बताए समय में काम करने में कोई हर्ज नजर नहीं आता। लोगों का ऐसा मानना होता है कि मुहूर्त पर 2 - 4 हजार रूपए खर्च कर, काल्पनिक ही सही, परेशानियों से बचा जा सकता है तो सौदा घाटे का नहीं।

यह दीगर बात है कि परेशानियां ज्यों की त्यों हैं और शुभ मुहूर्त में काम करने के बाद भी होती हैं। लेकिन यह अंधविश्वास भारतीय जनमानस के दिलोदिमाग में पंडों ने कैंसर की तरह ठूंस रखा है ताकि उन की कमाई पर आंच न आए।

विवाह मुहूर्त का कारोबार

ऐसे लोगों की कमी नहीं है जो छाती ठोंक कर दावे से कहते हैं कि हम अंधविश्वासी नहीं हैं पर बात शादी की हो या दूसरे शुभ कार्यों की, तो वे भी मुहूर्त के मुहताज दिखते हैं और तुरंत किसी पंडे के पास भागते हैं। मुहूर्त पूछने की दक्षिणा देते हैं, उस के पैर भी छूते है और कुछ ऐडवांस दे कर पंडे की बुकिंग भी करा आते हैं। इन पढ़ेलिखे लोगों के अंधविश्वास से दूर रहने के दावे पर तरस ही खाया जा सकता है। जबकि उस प्रचार प्रसार पर चिंता जताई जा सकती है जो लगातार चलता रहता है, और जिस के झांसे में लोग आते रहते है।

यह मुहूर्त आता कहां से है, इस की जानकारी आम लोगों को नहीं रहती, सिर्फ पंडों को रहती है, जो संगठित हैं। देश के प्रमुख धार्मिक मठों से एक फतवा सा जारी होता है कि साल 2014 में केवल इन 90 दिनों में शादियां होंगी क्योंकि ये शुभ हैं और देखते ही देखते सट्टे के नंबरों की तरह मुहूर्त देशभर में फैल जाता है।

शादियों के मद्देनज़र देखें तो यह एक तरह की साजिश ही है जिस का मकसद यह है कि पंडों की कमाई ज्यादा से ज्यादा हो। 2013 के मुकाबले 2014 में 36 दिन शादियों के घट गए हैं। इस से होगा यह कि शादियों का खर्च कई गुना बढ़ जाएगा। एक दिन में शादियां ज्यादा होंगी तो टैंट, कैटरर्ज़, कपड़े, कार्ड मैरिज हौल, बैंडबाजे, घोड़ी घोड़ा समेत शादी से जुड़े तमाम खर्चे बढ़ जाएंगे और अफरातफरी मचेगी सो अलग।

भाव पंडों के भी बढ़ेंगे जो एक दिन में 4 - 4 शादियां कराते हैं और प्रति शादी 1,100 से ले कर 11 हजार रूपए तक फीस (यजमान की हैसियत और भावताव के मुताबिक) वसूलते हैं। यह कारोबार भी डिमांड ऐंड सप्लाई के सिद्धांत पर चलता है। अगर एक दिन में एक शहर में 1 हज़ार शादियां हैं तो पंडों के मुहताज स्वाभाविक तौर पर हो जाएंगे। हर भारतीय जानता है कि दक्षिणा ज्यादा दी जाए तो पंडा उन के माफिक मुहूर्त निकाल देता है, इसी से मुहूर्त की औचित्यता व बकवास दोनों साबित हो जाते हैं।

शादी के मुहूर्त को ले कर पंडों ने तरहतरह के दुष्प्रचार फैला रखे हैं कि गलत यानी अशुभ ग्रहनक्षत्रों में परिणय हुआ तो उस का टूटना या बिगड़ना तय है, पति व पत्नी के बीच अनबन चलती रहेगी, बच्चे नहीं होंगे और क्लेश होता रहेगा।

कोई पंडा गारंटी नहीं देता कि शुभ मुहूर्त में शादी कराए जाने पर वरवधू का दांपत्य अच्छा गुजरेगा। तलाक के लाखों मुकदमें अदालतों में चल रहे हैं, वे सभी अशुभ मुहूर्त के नहीं हैं बल्कि 90 फीसदी शुभ मुहूर्त के ही निकलेंगे जो पंडों की कराई शादी के होंगे। इस बात पर चूंकि अभी तक कोई उपभोक्ता फोरम नहीं गया है, इसलिए पंडे बेफिक्र रहते हैं।

इस बेफिक्री की दूसरी बड़ी वजहें भी है। मसलन, पंडा कह सकता है कि वरवधू के भाव शुभ नहीं थे, उन्होंने समय पर अक्षत नहीं डाले थे, जनेऊ विधिवत नहीं बांधा था, मन में हमारा बबलाया मंत्र नहीं दोहराया था या फिर कन्यादान लेने वाले ने व्रत तोड़ दिया होगा, वगैरह वगैरह।

ये बातें बताती हैं कि समाज को पिछड़ा रखने में सब से बड़ा योगदान पंडों का है जो अपने धंधें की खातिर किसी भी हद तक जा सकते हैं और जाते भी हैं। लोगों के पारिवारिक और सामाजिक जीवन को दुष्कर बना कर पैसे ऐंठना ही जिन्होंने व्यापार बना रखा हो उन से तो भगवान, यदि हों भी नहीं जीत सकता।

यहीं पंडे रामसीता के वनवास पर ग्रहनक्षत्रों की गणना कर बताते हैं कि तत्कालीन यानी त्रेता युग के पंडों ने कहां चूक की थीं। कहीं चूक हुई थी, यह तो वे मानते हैं पर उस की जिम्मेदारी नहीं लेते उलटे, देवीदेवताओं तक की शादियों का हवाला दे कर लोगों को डराते रहते हैं कि देखो, अशुभ मुहूर्त में शादी करने से तो देवता लोग भी रोए और झींके थे।

यानी चित भी मेरी और पट भी मेरी और सिक्का मेरे बाप का, की तर्ज पर काम होते हैं। इसीलिए लोगों को उन्होंने मुहूर्त का गुलाम बना कर रख दिया है। गर्भ में आने से ले कर श्मशान तक आदमी मुहूर्त के नाम पर पंडों को दक्षिणा देता रहता है। नाम रखने का मुहूर्त, पहली बार अन्न खाने का मुहूर्त,

स्कूल जाने का मुहूर्त, जनेऊ पहनने का मुहूर्त, गृहप्रवेश का मुहूर्त आदि। आलम यह है कि सिर्फ शौच जाने की मुहूर्तबाध्यता नहीं है क्योंकि प्राकृतिक दबाव के चलते लोग उस का पालन नहीं कर पाएंगे। मुहूर्त का यह अवैज्ञानिक कारोबार बताता यह है कि पंडे भारतीय समाज को सभ्य और तार्किक कभी नहीं होने देंगे।

मीडिया भी है दोषी

ये शुभ मुहूर्त वाराणसी के किसी मठ या पीठ से निकले हों या इलाहाबाद के, पर इन का प्रचार प्रसार करने वाला मीडिया भी कम दोषी नहीं जो एक ही बात का लगातार इस तरह प्रचार करता है कि लोग अपना अच्छा बुरा और मुहूर्त का औचित्य क्या है, यह सोच ही नहीं पाते।

कोई भी अखबार उठा लीजिए, वह तरहतरह के धार्मिक समाचारों के अलावा बेहूदा धार्मिक बातों से भरा पड़ा रहता है। दैनिक भविष्यफल, शुभांक और टोनेटोटकों वाले लेख इन पंडों की दुकान चमकाने में सहायक ही होते हैं और अखबारों की बिक्री की एक बड़ी वजह भी यही बकवास रह गई है। पत्रिकाएं भी इसीलिए लोग खरीदते हैं। जिन में भले ही जीवनोपयोगी सामग्री हो न हो पर गुमराह करने वाली यानी मुहूर्त जैसी बातें जरूर होती हैं।

धर्मगुरूओं के प्रवचनों में भी मुहूर्त की महिमा बढ़चढ़ कर पाई जाती है तो दूसरी तरफ न्यूज चैनल्स भी दिनरात मुहूर्त और उस जैसी बकवास बातों का हल्ला मचाए रखते हैं जिस से आम लोगों को लगता है कि मुहूर्त जरूरी है यह कोई नहीं समझ पाता कि मुहूर्तों की संख्या कमज्यादा करने या होने में भी सबसे बड़ी मार, जो मान्सिक के साथसाथ आर्थिक भी होती है, उन्हीं पर पड़ती है।

इस से भी जी नहीं भरता तो तरहतरह के दुर्लभ संयोगों की भी इश्तहारों की तरह इतना बढ़ाचढ़ा कर प्रचारित प्रसारित किया जाता है कि लोगों को लगता है कि जरूर इस में कोई दम या चमत्कार है। मसलन, बीते 5 सालों से गुरूपुष्य नक्षत्र योग का खूब प्रचारप्रसार मीडिया कर रहा है। इस में लोगों को जायदाद, सोना, चांदी और वाहन खरीदने की सलाह दी जाती है। यह संयोग इतना सुलभ है कि साल में 2 - 3 दफा पड़ ही जाता है पर असल में यह है क्या, यह कोई नहीं जानता, न जानना चाहता है। लगता ऐसा है कि मीडिया और पंडे चरवाहे हैं ओर लोग भेडें, जो आंखें मूंदे उन के बताए मुहूर्त के पीछे चल पड़ते हैं।

मकसद लोगों को लूटना है और लोग खुशीखुशी लुट रहे हैं क्योंकि पंडों ने धर्म और उस के अंधविश्वासों का एक मायाजाल या चक्रव्यूह उन के इर्दगिर्द फैला रखा है। इस से पंडों का पेट पलता है। मुफ्त में मालपुआ खाने को मिलता है। जेब भरती रहती है और समाज ऊपर से चमकता दिखता है पर अंदर से खोखला होता रहता है।

2014 के विवाह मुहूर्तों से संबंध रखती दिलचस्प बात यह भी है कि नवंबर 2014 में सिर्फ 1 दिन 30 नवंबर को ही शादियां होंगी जिससे शादी का खर्च दस गुना तक बढ़ जाएगा। जो पैसा लोग जश्न मनाने और दूसरे कार्यों में खर्च कर सकते थे, नवदंपती के भविष्य व गृहस्थी के लिए दे सकते थे, वह मुहूर्त कारोबार की बलि चढ़ कर जाया हो जाएगा।

दरअसल, लोग अपनी सहूलियत से कभी भी शादी करें तो कोई पहाड़ नहीं टूट पड़ेगा, उलटे, पैसे व वक्त की बचत होगी लेकिन पंडे यह नहीं चाहते। इसलिए ऐसा कभी हो पाएगा, कहना मुश्किल है। अगर हो पाए तो लोग इस झंझट और कई तनावों से बच जाएंगे। मुहूर्त तो पंडों का धंधा है, लोग उन के धंधे में बेवजह फंसते हैं।

शुभ संग्राम

भटिंडा: - श्रीमान बलदेव सिंह जी 13 मार्च दुपहिर को भटिंडा पहुंचे। कल्याण से श्रीमान बलबहादुर सिंह जी भी उनके साथ आकर शामिल हो गए। वहां श्रीमती ज्ञानवती जी को और उनके सपुत्र को मिले और ज्ञानवती जी के धर्मपति की मृत्यु पर शोक और हमदर्दी प्रगट की, लगभग आधा घण्टा वहां पर ठहरे।

गोनियाना मण्डी: - यहां पर पहुंचकर सभा स्थान निरधारित किया। रात को 8.30 बजे पहली सभा रखी गई, यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कराई। यह सभा हैड मास्टर हरबंस सिंह जी के घर रखी गई। महिमा सवाई से भी कुछ जन आकर शामिल हुए। हाजरी 20 के करीब थी।

श्री सभापति जी ने बताया कि हमारे शरीर की सेहत और विकास के लिए शुद्ध हवा, शुद्ध पानी वा पौष्टक भोजन की अवश्यकता है। वैसे ही हमारे सामाजिक जीवन के लिए शुद्ध वातावरण की अत्यन्त अवश्यकता है। ऐसा अति अवश्यक वातावरण परम पू० भगवान देवात्मा के देव प्रभावों द्वारा ही मिलता है। इसमे सांस लेकर मनुष्य की चिन्ताएं और क्रियाएं नया रूप ग्रहण करती हैं। ठीक और ग़ल्त वातावरण की पहचान समझ आ जाती है। इस विशेष वातावरण में कम विद्या के बावजूद भी विलक्षण योग्यताएं पैदा हो जाती हैं। मनुष्य के स्वभाव में उच्च भाव मूलक गुण पैदा हो जाते हैं। मनुष्य अपना शत्रु न रहकर मित्र बन जाता है। माननीय श्रीमान गुरूवन्त सिंह जी और श्रीमान गुरूबखश सिंह जी की घटनाओं द्वारा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी इस आत्मिक सुन्दर वातावरण का वर्णन किया।

14.3.14 सुबह 8.30 बजे सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी: – मनुष्य और बहुत सारा ज्ञान रखता है। पर सबसे अवश्यक ज्ञान से कोरा है। वह ज्ञान अपने स्वभाव के सम्बन्ध में है। मनुष्य को अपने स्वभाव के सम्बन्ध में ठीक ज्ञान का न होना मनुष्य की सारी हानियों, मुश्किलों, दुखों और नाश का कारण है, जो अपने स्वभाव का ज्ञान नहीं पाएगा, वह हानियों और दुखों से सुरक्षित नहीं रह सकता। यह मनुष्य के स्वभाव का ज्ञान केवल परम पू० भगवान देवात्मा की दुनियां में मिलता है। घटनाओं द्वारा इस सचाई को रोशन किया गया।

8.30 बजे रात – सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी: - इस सभा में 30 के लगभग हाज़री थी। सभापति जी ने परम पू० भगवान देवात्मा के सम्बन्ध तत्व के विषय में बताया कि सम्बन्ध त्याग करना धर्म नहीं। सम्बन्धों से बैरागी होना भी धर्म नहीं। सम्बन्धों में उच्च व्यवहारों द्वारा ही धर्म की पहचान होती है। कुछ सम्बन्धों में, विशेषकर भाई भाई के सम्बन्ध में और पति पत्नि के सम्बन्ध में उच्च व्यवहारों की उदाहरणें देकर सच्चे धर्म की तस्वीर खींची गई। सभापति जी ने परम पू० भगवान देवात्मा की महान कृपा द्वारा, जो फैज़ मिले हैं, उनका श्रद्धा भाव से ब्यान किया जो बहुत प्रभावदायक था।

15.3.14 सुबह 9 बजे, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी। सभापति जी ने बताया कि गाय और भेड़िए में बहुत अन्तर है। उच्च भावों के बिना मनुष्य भेड़िए जैसा हानिकारक और घातक है। श्रद्धा, शुक्रगुजारी, हमदर्दी वा हानि परिशोध द्वारा मनुष्य अच्छा बनता है। अच्छे बनना ही धर्मवान बनना है। शुक्रगुज़ारी का ब्यान करते हुए श्रीमान जी ने हिमांयु वा पन्ना दाई और कई और शुक्रगुज़ार व्यक्तियों की इस भीतरी सुन्दरता के दर्शन कराए। उपकारी माता पिता, उपकारी डाक्टरों और अध्यापिकों के उपकारों को बड़ी गहराई से हृदयों पर अंकित किया। बड़ा सुन्दर वातावरण पैदा हुआ। कईयों की आंखें भरी हुई थी। ऐसे

वातावरण की अवश्यकता अनुभव होती थी।

8.30 बजे रात, सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी : इस सभा में हाज़री 30 - 32 जनों की थी। "भुल्ल है प्यार वधाने, नीच अनुरागों दे" नामक भजन का गान किया गया। सभापति जी ने मनुष्य की सुख अनुरागी प्रकृति के विषय में रोशनी डालते हुए बताया कि मनुष्य विविध प्रकार के सुखों की तृप्ति चाहता है। जिस सुख की तृप्ति होती रहे वही सुख वासना बढ़ती रहती है। शरीर सम्बन्धी सुखों की तृप्ति से शारीरिक सुख अनुराग बढ़ जाते हैं। अंह सम्बन्धी सुखों से अंह सम्बन्धी घमंड, घृणा, स्वार्थ वा मान बड़ाई आदि सुख बढ़ जाते हैं और वही उसके परिचालिक बन जाते हैं। सभापति जी ने नशा सुख अनुराग, काम सुख अनुराग और धन के सुख अनुराग पर विस्तार से चर्चा करते हुए इनका महा भयानक, महा घातक रूप पेश किया। यह भी बताया गया कि परम पू० भगवान देवात्मा की रोशनी में अपना प्रकृत और भयानक रूप नज़र आता है। उनकी शक्ति द्वारा अर्थात् उनके देव तेज़ द्वारा ही अधिकारी आत्माओं की इनसे रक्षा हो जाती है। कई दृष्टांतों द्वारा इस विषय को पेश किया। स्वयं के अनुभव और परिवर्तन भी भावपूर्ण होकर बताए।

16.3.14, सुबह 9 बजे, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी: - सभापति जी ने बताया कि आजकल कोई घर ऐसा नहीं जहां शीशा नहीं है। कोई ब्यूटी पार्लर शीशे के बिना नहीं हो सकता। शीशे में ही अपना चेहरा वा पोशाक देख सकते हैं? परन्तु अपना मन, आत्मा वा स्वभाव देखने के लिए कोई शीशा नहीं। शरीर के अन्दरूनी अंगों को देखने के लिए कई टैस्ट हो जाते हैं, X-ray, ECG, ऐंजोग्राफी, अल्ट्रासाऊंड आदि बन गए हैं, जिससे शरीर के रोगों का पता लगता है, परन्तु परम पू० भगवान देवात्मा के दर के बिना कोई ऐसी रोशनी नहीं जो मनुष्य को उसका वास्तविक रूप दिखा सके। उसके आत्मा के विकार वा रोग दिखा सके। देवात्मा के देव अनुरागों से यह विलक्षण रोशनी प्रगट हुई है जो ऐसा शीशा है, जिसमें मनुष्य अपने सुख अनुरागों की घृणित गतियां देखता है। उनकी भयानकता को सोच डर महसूस करता है, उनसे मुक्त होना चाहता है। इसी शीशे का नाम देव ज्योति है। काश! अधिक से अधिक जन इस ज्योति के अधिकारी हो सकें।

थराजवाला : शाम को दोनों धर्म सम्बन्धी थराजवाला पहुंचे, घरों में जाकर सभा की सूचना दी गई। 5.30 बजे शाम को सभा की गई। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने यह सभा करवाई। उन्होंने बताया कि सुखी जीवन जीने के लिए धन, विद्या, एकता, सेहत की आवश्यकता है। उपरोक्त अवशकताओं से सबसे बढ़कर आवश्यकता है उच्च संगत की, क्योंकि मिथ्या और पाप मनुष्य के शत्रु हैं। इनसे बचने के लिए अवश्यक है कि परम पू० भगवान देवात्मा की पैदा की हुई संगत से लाभ उठाया जाए। सभापति जी ने इस संगत से लाभ उठाने वाले जनों वा इससे वंचित रहने वाले जनों के शिक्षाप्रद उदाहरण पेश किए। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इसी विषय की और स्पष्ट किया।

17.3.14, सुबह 9 बजे सुबह, सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी: - सभापति जी ने बताया झूठ और पाप मनुष्य के शत्रु हैं। मनुष्य का मन वा आत्मा इनसे प्रेरित होता है। उन्होंने डा० हरदयाल राए जी की घटना बताई। आर्या समाज के प्रधान के पाप ग्रस्त जीवन का ब्यान किया जो स्वयं उन्होंने सभा में बताया था। उस पाप से निकलने के लिए वह कितने असमर्थ्य थे। फाज़िलका के ही एक और सेठ के धन के प्यार ने उसके बेटे की जान ले ली। इस प्रभावदायक घटना के द्वारा समझाया कि धन का प्रेम कितनी बड़ी हानि करने के लिए मनुष्य को बेबस कर देता है। धन प्रेम की बलि उसका बेटा चढ़ गया। देव प्रभावों

Published on 5th of the month
20
WPP - Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

के बिना मनुष्य सदा दुख और हानि ही उठाता है।

3 बजे दुपहिर सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी:- श्रीमान बलवन्त सिंह जी के बेटे दर्शन सिंह जी और उनके भाईयों के परिवारिक जनों को लेकर सभा करवाई गई। देव धर्म की संगत परिवार के लिए अति आवश्यक है, यह बताया गया। दुखों और हानियों से अच्छी संगत बचाती है। मिथ्या से बचाकर सत्य विश्वास पैदा करती है। आजकल मिथ्या का फैलाव बढ़ता जा रहा है। पारिवारिक जनों ने इस संगत की अवश्यकता को अनुभव किया और 600 रू दान में दिए।

5 बजे शाम सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी: – सभपति जी ने पू० भगवन की सम्बन्ध तत्व की शिक्षा बताते हुए माता पिता के सम्बन्ध में ब्यान किया। कई अच्छे बेटों की प्रभावशाली घटनाएं बहुत सुन्दर वा भावुक ढंग से बताई। हाजरीन भी अपने माता पिता के महान वा उपकारी रूप को सामने लाकर उनके लिए सन्मान वा शुक्रिया के भाव महसूस कर रहे थे।

श्रीमान बलदेव सिंह जी ने गुरू महाराज के प्रभावों द्वारा परिवर्तित हृदयों की हृदय स्पर्षिय घटनाएं बताई, इससे अन्मोल उच्च संगत की महिमा नज़र आ रही थी।

18.3.2014, सुबह 9 बजे सभापति श्रीमान बलेदव सिंह जी- सभापति जी ने बताया देव धर्म नेचर के नियमों पर आधारित है। शारीरिक स्वस्थ्य सम्बन्धी कुछ नियमों का ज्ञान दिया। सैर का नियम, लम्बे सांस लेने का नियम, खाना चबाकर खाने का नियम, आंखे, घुटने आदि ठीक रखने के नियम बताए। जैसे सूर्य की किरणें वर्षों के वर्ष कोयले पर पड़ता रहकर उसे हीरा बना देती है, इसी प्रकार पू० भगवान की अध्यात्मिक देव सूर्य्य की रोशनी लगातार मिलती रहे तो श्रीमान नेतराम जी, श्रीमान नौध सिंह जी, सरदार हरनाम सिंह जी जैसी हस्तियां हीरे बन गई। प्रभावशाली घटनाओं से यह सभा बहुत प्रभावशाली बन गई। 1000 रू० दान और 100 रू० अख़बार चन्दा प्राप्त हुआ।

थराजवाला से दोनों धर्म सम्बन्धी डबवाली पहुंचे, वहां से श्रीमान जीत सिंह जी और श्री भजन सिंह जी अपनी कार में उन्हें सिरसा ले गए। सिरसा में कुछ देर के लिए रमेश जी के पास रुके, उनके धर्म पति पवन कुमार जी को मिले। शाम तक मल्लेका पहुंच गए, जहां रात 8 बजे सभा रखी गई।

(चलता)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts